08

लिंग

हिन्दी भाषा में संज्ञा शब्दों के लिंग का प्रभाव उनके विशेषणों तथा क्रियाओं पर पड़ता है। इस दृष्टि से भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए संज्ञा शब्दों के लिंग-ज्ञान अत्यावश्यक हैं।

'लिंग' का शाब्दिक अर्थ प्रतीक या चिह्न अथवा निशान होता है। संज्ञाओं के जिस रूप से उसकी पुरुष जाति या स्त्री जाति का पता चलता है, उसे ही 'लिंग' कहा जाता है।

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखें—

1. गाय बछड़ा देती है।
2. बछड़ा बड़ा होकर गाड़ी खींचता है।
3. पेड़-पौधे पर्यावरण को संतुलित रखते हैं।
4. धोनी की टीम फाइनल में पहुँची।
5. सानिया मिर्जा क्वार्टर फाइनल में पहुँची।
6. लादेन ने पेंटागन को ध्वस्त किया।
7. अभी वैश्विक आर्थिक मंदी छायी है।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देखते हैं कि किसी संज्ञा का प्रयोग पुँल्लिग में तो किसी का स्त्रीलिंग में हुआ है। इस प्रकार लिंग के दो प्रकार हुए—

(i) पुँल्लिग और (ii) स्त्रीलिंग

पुँल्लिग से पुरुष-जाति और स्त्रीलिंग से स्त्री-जाति का बोध होता है।

बड़े प्राणियों (जो चलते-फिरते हैं) का लिंग-निर्धारण जितना आसान है छोटे प्राणियों और निर्जीवों का लिंग-निर्धारण उतना ही कठिन है। नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया का उचित रूप भरकर देखें—

1. भैया पढ़ने के लिए अमेरिका ……….. हैं। *(जाना)*
2. भाभी बहुत ही लज़ीज़ भोजन ……….. हैं। *(बनाना)*
3. शेर को देखकर हाथी चिग्घाड़ने ……….. । *(लगना)*
4. राणा का घोड़ा चेतक बहुत तेज ……….. । *(दौड़ना)*
5. तनवीर नाट्य-जगत् के सिरमौर ……….. । *(होना)*
6. चींटी अण्डे लेकर ……….. । *(चलना)*
7. चील बहुत ऊँचाई पर उड़ ……….. है। *(रहना)*
8. भरी सभा में ……….. नाक कट ……….. । *(वह/जाना)*
9. किताब ……….. । *(लिखा जाना)*
10. मेघ बरसने ……….. । *(लगना)*

आपने गौर किया होगा कि ऊपर के प्रथम पाँच वाक्यों को भरना जितना आसान है, नीचे के शेष वाक्यों को भरना उतना ही कठिन । क्यों ? क्योंकि, आपको उनके लिंगों पर सन्देह होता है। इसलिए वैयाकरणों ने लिंग-निर्धारण के कुछ नियम बनाए हैं जो इस प्रकार हैं—

नोट : *वैयाकरण विभिन्न साहित्यकारों और आम जनों के भाषा-प्रयोग के आधार पर नियमों का गठन करते हैं; अपने मन से नियम नहीं बनाते। अर्थात् भाषा-संबंधी-नियम उसके प्रयोग पर निर्भर करता है।*

1. प्राणियों के समूह को व्यक्त करनेवाली कुछ संज्ञाएँ पुँल्लिग हैं तो कुछ स्त्रीलिंग :

पुँल्लिग			स्त्रीलिंग		
परिवार	कुटुम्ब	संघ	सभा	जनता	सरकार
दल	गिरोह	झुंड	प्रजा	समिति	फौज
समुदाय	समूह	मंडल	सेना	ब्रिगेड	मंडली
प्रशासन	दस्ता	कबीला	कमिटी	टोली	जाति
देश	राष्ट्र	राज्य	जात-पात	कौम	प्रजाति
प्रान्त	मुलक	नगरनिगम	भीड़	पुलिस	नगरपालिका
प्राधिकरण	मंत्रिमंडल	अधिवेशन	संसद	राज्यसभा	
स्कूल	कॉलेज	विद्यालय	विधानसभा	पाठशाला	
विद्यापीठ	विश्वविद्यालय		बैठक	गोष्ठी	

2. तत्सम एवं विदेशज शब्द हिन्दी में लिंग बदल चुके हैं :

शब्द	तत्सम/विदेशज	हिन्दी में	शब्द	तत्सम/विदेशज	हिन्दी में
महिमा	पुँ०	स्त्री०	किरण	पुँ०	स्त्री०
आत्मा	पुँ०	(आतमा) स्त्री०	समाधि	पुँ०	स्त्री०
देह	पुँ०	स्त्री०	राशि	पुँ०	स्त्री०
देवता	स्त्री०	पुँ०	ऋतु	पुँ०	स्त्री०
विजय	पुँ०	स्त्री०	वस्तु	नपुं०	स्त्री०
दुकान	स्त्री०	(दूकान) पुँ०	आयु	नपुं०	स्त्री०
मृत्यु	पुँ०	स्त्री०			

3. कुछ शब्द उभयलिंगी हैं। इनका प्रयोग दोनों लिंगों में होता है :

तार आया है।	तार आई है।
मेरी आत्मा कहती है।	मेरा आतमा कहता है।
वायु बहती है।	वायु बहता है।
पवन सनसना रही है।	पवन सनसना रहा है।
दही खट्टी है।	दही खट्टा है।
साँस चल रही थी।	साँस चल रहा था।
मेरी कलम अच्छी है।	मेरा कलम अच्छा है।
रामायण लिखी गई।	रामायण लिखा गया।
उसने विनय की।	उसने विनय किया।

नोट : *प्रचलन में आत्मा, वायु, पवन, साँस, कलम, रामायण आदि का प्रयोग स्त्री० में तथा तार, दही, विनय आदि का प्रयोग पुँल्लिंग मे होता है। हमें प्रचलन को ध्यान में रखकर ही प्रयोग में लाना चाहिए।*

4. कुछ ऐसे शब्द हैं, जो लिंग-बदल जाने पर अर्थ भी बदल लेते हैं :

1. उस मरीज को बड़ी मशक्कत के बाद कल मिली है। *(चैन)*
2. उसका कल खराब हो चुका है। *(मशीन)*
3. कल बीत जरूर जाता है, आता कभी नहीं। *(बीता और आनेवाला दिन)*

4. मल्लिकनाथ ने मेघदूत की टीका लिखी। *(मूल किताब की व्याख्या)*
5. उसने चन्दन का टीका लगाया। *(माथे पर बिन्दी)*
6. उसने अपनी बहू को एक सुन्दर टीका दिया। *(आभूषण)*
7. वह लकड़ी के पीठ पर बैठा भोजन कर रहा है। *(पीढ़ा/आसन)*
8. उसकी पीठ में दर्द हो रहा है। *(शरीर का एक अंग)*
9. सेठजी के कोटि रुपये व्यापार में डूब गए। *(करोड़)*
10. आपकी कोटि क्या है, सामान्य या अनुसूचित ? *(श्रेणी)*
11. कहते हैं कि पहले यति तपस्या करते थे। *(ऋषि)*
12. दोहे छंद में 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है। *(विराम)*
13. धार्मिक लोग मानते हैं कि विधि सृष्टि करता है। *(ब्रह्मा)*
14. इस हिसाब की विधि क्या है? *(तरीका)*
15. उस व्यापारी का बाट ठीक-ठाक है। *(बटखरा)*
16. मैं कबसे आपकी बाट जोह रहा हूँ। *(प्रतीक्षा)*
17. पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले। *(राह)*
18. चाकू पर शान चढ़ाया गया। *(धार देने का पत्थर)*
19. हमारे देश की शान निराली है। *(इज्जत)*
20. मेरे पास कश्मीर की बनी एक शाल है। *(चादर)*
21. उस पेड़ में काफी शाल था। *(कठोर और सख्त भाग)*
22. मैंने एक अच्छी कलम खरीदी है। *(लेखनी)*
23. मैंने आम का एक कलम लगाया है। *(नई पौध)*

5. कुछ प्राणिवाचक शब्दों का प्रयोग केवल स्त्रीलिंग में होता है, उनका पुँल्लिंग रूप बनता ही नहीं।

जैसे—सुहागिन, सौत, धाय, संतति, संतान, सेना, सती, सौतन, नर्स, औलाद, पुलिस, फौज, सरकार।

6. पर्वतों, समयों, हिन्दी महीनों, दिनों, देशों, जल-स्थल, विभागों, ग्रहों, नक्षत्रों, मोटी-मद्दी, भारी वस्तुओं के नाम पुँल्लिंग हैं।

जैसे—हिमालय, धौलागिरि, मंदार, चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ, सोमवार, मंगलवार, भारत, श्रीलंका, अमेरिका, लट्ठा, शनि, प्लूटो, सागर, महासागर आदि।

7. भाववाचक संज्ञाओं में त्व, पा, पन प्रत्यय जुड़े शब्द पुं० और ता, आस, अट, आई, ई प्रत्यय जुड़े शब्द स्त्रीलिंग हैं—

पुँल्लिंग		स्त्रीलिंग		
शिवत्व	मनुष्यत्व	मनुष्यता	मिठास	घबराहट
पशुत्व	बचपन	बनावट	लड़ाई	गर्मी
लड़कपन	बुढ़ापा	दूरी	प्यास	बड़ाई

8. ब्रह्मपुत्र, सिंधु और सोन को छोड़कर सभी नदियों के नामों का प्रयोग स्त्रीलिंग में होता है।

जैसे—गंगा, यमुना, कावेरी, कृष्णा, गंडक, कोसी आदि।

9. शरीर के अंगों में कुछ स्त्रीलिंग तो कुछ पुंल्लिंग होते हैं :

पुंल्लिंग					स्त्रीलिंग				
सिर	माथा	बाल	कान	मुँह	आँख	नाक	जीभ	वेणी	चोटी
मस्तक	ललाट	कंठ	ओष्ठ	दाँत	शिखा	दाढ़ी	मूँछ	आँत	गर्दन
गला	हाथ	पैर	नाखून	भाल	ग्रीवा	ठोड़ी	कमर	कलाई	पीठ
पेट	टखना	अँगूठा	घुटना	मांस	कुहनी	उँगली	काँख	हड्डी	उँगली
फेफड़ा					शिरा				

10. कुछ प्राणिवाचक शब्द नित्य पुंल्लिंग और नित्य स्त्रीलिंग होते हैं :

नित्य पुंल्लिंग			नित्य स्त्रीलिंग		
गरुड़	बाज	पक्षी	दीमक	चील	जूँ
खग	विहग	कछुआ	मछली	गिलहरी	मैना
मगरमच्छ	खरगोश	गैंडा	तितली	कोयल	मकड़ी
चीता	मच्छर	खटमल	छिपकली	चींटी	
बिच्छू	रीछ	जुगनू			

नोट : इनके स्त्रीलिंग-पुंल्लिंग रूप को स्पष्ट करने के लिए नर-मादा का प्रयोग करना पड़ता है। जैसे—नर चील, नर मक्खी, नर मैना, मादा रीछ, मादा खटमल आदि।

11. हिन्दी तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

जैस—प्रतिपदा, द्वितीया, षष्ठी, पूर्णिमा आदि।

12. संस्कृत के या उससे परिवर्तित होकर आए अ, इ, उ प्रत्ययान्त पुं० और नपुं० शब्द हिन्दी में भी प्रायः पुं० ही होते हैं। जैसे—

जग	जगत्	जीव	मन	जीत	मित्र	पद्य	साहित्य
संसार	शरीर	तन	धन	मीत	चित्र	गद्य	नाटक
काव्य	छन्द	अलंकार	जल	पल	स्थल	बल	रत्न
ज्ञान	मान	धर्म	कर्म	जन्म	मरण	कवि	ऋषि
मुनि	संत	कांत	साधु	जन्तु	जानवर	पक्षी	

13. प्राणिवाचक जोड़ों के अलावा ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्री० होते हैं। जैसे—

कली	नाली	गाली	जाली	सवारी	तरकारी	सब्जी	सुपारी
साड़ी	नाड़ी	नारी	टाली	गली	भरती	वरदी	सरदी
गरमी	इमली	बाली					

परन्तु, मोती, दही, घी, जी, पानी आदि ईकारान्त होते हुए भी पुंल्लिंग हैं।

14. जिन शब्दों के अन्त में त्र, न, ण, ख, ज, आर, आय, हों वे प्रायः पुंल्लिंग होते हैं। जैसे—

चित्र	रदन	वदन	जागरण	पोषण	सुख	सरोज	मित्र
सदन	बदन	व्याकरण	भोजन	दुःख	मनोज	पत्र	रमन
पालन	भरण	हरण	रूख	भोज	अनाज	ताज	समाज
ब्याज	जहाज	प्रकार	द्वार	श्रृंगार	विहार	आहार	संचार
आचार	विचार	प्रचार	अधिकार	आकार	अध्यवसाय	व्यवसाय	अध्याय
न्याय							

अपवाद (यानी स्त्री०)

थकन	सीख	लाज	खोज़	हार	हाय	लगन	भीख
खाज	हुंकार	बौछार	गाय	धुमन	चीख	मीज़	पुकार
जयजयकार	राय						

15. सब्जियों, पेड़ों और बर्तनों में कुछ के नाम पुंल्लिंग तो कुछ के स्त्री हैं। जैसे—

पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग		
शलजम	अदरख	टमाटर	बन्दगोभी	फूलगोभी	भिंडी
बैंगन	पुदीना	मटर	तुरई	मूली	गाजर
प्याज	आलू	लहसुन	पालक	मेंथी	सरसों
धनिया	खीरा	करेला	फलियाँ	फराज़बीन	ककड़ी
कचालू	कद्दू	कुम्हड़	कचनार	शकरकन्दी	नीम
नींबू	तरबूज	खरबूजा	नाशपाती	लीची	इमली
कटहल	फालसा	पपीता	बीही	अमलतास	मौंसंबी
कीकर	सेब	बेल	खुबानी	चमेली	बेली, जूही
जामुन	शहतूत	नारियल	अंजीर	नरगिस	चिरौंजी
माल्टा	बिजौरा	तेंदु	वल्लरी	लता	बेल, गूठी
आबनूस	चन्दन	देवदार	पौध	जड़	बगिया, छुरी
ताड़	खजूर	बूटा	भट्ठी	अँगीठी	बाल्टी
वन	टब	पतीला	देगची	कटोरी	कैंची
कटोरा	चूल्हा	चम्मच	थाली	चलनी	चक्की
स्टोव	चाकू	कप	थाल	तवा	नल
चर्खा	बेलन	कुकर			

16. रत्नों के नाम, धातुओं के नाम तथा द्रवों के नाम अधिकांशतः पुंल्लिंग हुआ करते हैं। जैसे—

हीरा	पुखराज	पन्ना	नीलम	लाल	जवाहर	मूँगा
मोती	सोना	पीतल	ताँबा	लोहा	कांस्य	सीसा
एल्युमीनियम	प्लेटिनम	यूरेनियम	टीन	जस्ता	पारा	पानी
जल	घी	तेल	सोडा	दूध	शर्बत	रस
जूस	काढ़ा	कहवा	कोका	जलजीरा	आदि।	

अपवाद (यानी स्त्री०)

सीपी	मणि	रत्ती	चाँदी	मद्य	शराब	चाय
कॉफी	लस्सी	छाछ	शिकंजवी	स्याही	बूँद	धारा आदि

17. आभूषणों में स्त्रीलिंग एवं पुंल्लिंग शब्द हैं—

पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग			
कंगन	कड़ा	कुंडल	आरसी	नथ	तीली	माला
गजरा	झूमर	बाजूबन्द	बाली	झालर	चूड़ी	बिंदिया
हार	काँटे	झुमका	पायल	अँगूठी	कंठी	मुद्रिका
कील	शीशफूल	आभूषण				

18. किराने की चीजों के नाम, खाने-पीने के सामानों के नाम और वस्त्रों के नामों में पुंल्लिग स्त्रीलिंग इस प्रकार होते हैं।

पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग			
अदरक	जीरा	धनिया	सोंठ	हल्दी	सौंफ	अजवायन
मसाला	अमचूर	अनारदाना	दालचीनी	लवंग (लौंग)	हींग	सुपारी
पराठा	हलवा	समोसा	इलायची	मिर्च	कालीमिर्च	इमली
भात	भटूरा	कुल्या	रोटी	रसा	खिचड़ी	पूड़ी
चावल	रायता	गोलगप्पे	दाल	खीर	चपाती	चटनी
पापड़	लड्डू	रसगुल्ला	पकौड़ी	भाजी	सब्जी	तरकारी
मोहनभोग	पेड़ा	फुल्का	काँजी	बर्फी	मट्ठी	बर्फ
रूमाल	कुरता	पाजामा	चोली	अंगिया	जुर्राब	बंडी
कोट	सूट	मोजे	गंजी	पतलून	कमीज	साड़ी
जांघिया	दुपट्टा	टोप	धोती	पगड़ी	चुनरी	निक्कर
गाऊन	घाघरा	पेटीकोट	बनियान	लँगोटी	टोपी	

19. आ, ई, उ, ऊ अन्तवाली संज्ञाएँ स्त्रीलिंग और पुंल्लिग इस प्रकार होती हैं—

पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग					
कुत्ता	कुत्ता	बूढ़ा	प्रार्थना	दया	आज्ञा	लता	माला	भाषा
शशि	रवि	यति	कथा	दशा	परीक्षा	पूजा	कृपा	विद्या
कवि	हरि	मुनि	शिक्षा	दीक्षा	बुद्धि	रुचि	राशि	क्रांति
ऋषि	पानी	दानी	नीति	भक्ति	मति	छवि	स्तुति	गति
घी	प्राणी	स्वामी	स्थिति	मुक्ति	रीति	नदी	गठरी	उदासी
मोती	दही	गुरु	सगाई	चालाकी	चतुराई	चिट्ठी	मिठाई	मूँगफली
साधु	मधु	आलू	लकड़ी	पढ़ाई	ऋतु	वस्तु	मृत्यु	वायु
काजू	भालू	आँसू	बालू	लू	झाड़ू	वधू		

20. ख, आई, हट, वट, ता आदि अन्तवाली संज्ञाएँ प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे—

राख	भीख	सीख	भलाई	बुराई	ऊँचाई	गहराई
सच्चाई	आहट	मुस्कराहट	घबराहट	झुंझलाहट	झल्लाहट	सजावट
बनावट	मिलावट	रूकावट	थकावट	स्वतंत्रता	पराधीनता	लघुता
मित्रता	शत्रुता	कटुता	मधुरता	सुन्दरता	प्रसन्नता	सत्ता
रम्यता	अक्षुण्णता					

21. भाषाओं तथा बोलियों के नाम स्त्रीलिंग हुआ करते हैं। जैसे—

हिन्दी	संस्कृत	अंग्रेजी	बंगला	मराठी	तमिल	गुजराती
तेलुगु	कन्नड़	मलयालम	सिंधी	उर्दू	अरबी	फारसी
चीनी	फ्रेंच	लैटिन	ग्रीक	ब्रज	बाँगडू	अपभ्रंश
प्राकृत	बुंदेली	मगही	अवधी	भोजपुरी	मैथिली	पंजाबी
अफ्रीदी						

22. अरबी-फारसी उर्दू के 'त' अन्तवाली संज्ञाएँ प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे—

मोहब्बत	शोहरत	इज्जत	जिल्लत	किल्लत	शरारत	हिफाजत
इबादत	नसीहत	बगावत	हुज्जत	जुर्रत	कयामत	नजाकत
गनीमत						

23. अरबी-फारसी के अन्य शब्दों में कुछ स्त्रीलिंग तो कुछ पुंल्लिग इस प्रकार होते हैं—

पुंल्लिग			स्त्रीलिंग		
हिसाब	कबाब	जनाब	दुकान	सरकार	दीवार
मकान	इनसान	मेहमान	दवा	हवा	दुनिया
मेजबान	दरबान	अखबार	फिज़ाँ	हया	शर्म
बाजार	दुकानदार	मजा	गरीबी	अमीरी	वफादारी
वक्त	खत	होश	लाचारी	खराबी	मजदूरी
जोश	कुदरत	नवाब	लाश	तलाश	कशिश
जवाब	कशीदाकार		बारिश	शोरिश	कोशिश

24. अंग्रेजी भाषा से आए शब्दों का लिंग हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार तय होता है। जैसे—

पुंल्लिग			स्त्रीलिंग				
टेलीफोन	टेलीविजन	रेडियो	ग्राउंड	यूनिवर्सिटी	बस	जीप	फोटो
स्कूल	स्टूडेंट	स्टेशन	कार	ट्रेन	बोतल	पेंट	मशीन
पेन	बूट	बटन	पेंसिल	फिल्म	फीस	पिक्चर	

25. क्रियार्थक संज्ञाएँ पुंल्लिग होती हैं। जैसे—

नहाना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। टहलना हितकारी होता है।

गाना एक व्यायाम होता है।

नोट : जब कोई क्रियावाची शब्द (अपने मूल रूप में) किसी कार्य के नाम के रूप में प्रयुक्त हो तब वह संज्ञा का काम करने लगता है। इसे 'क्रियार्थक संज्ञा' कहते हैं। ऊपर के तीनों वाक्यों में लाल रंग के पद संज्ञा हैं न कि क्रिया।

26. द्वन्द्व समास के समस्तपदों का प्रयोग पुंल्लिग बहुवचन में होता है।

नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दें—

(i) मेरे माता-पिता आए हैं। (ii) उनके भाई-बहन शहर में पढ़ते हैं।

लिंग-संबंधी कुछ रोचक और विचारणीय बातें :

हिन्दी भाषा में लिंगों का तन्त्र काफी विकृत एवं भ्रामक है; क्योंकि एक ही शब्द का एक पर्याय तो स्त्रीलिंग है; जबकि दूसरा पुंल्लिग। हिन्दी के भाषाविदों एवं विद्वानों के लिए यह चुनौती भरा कार्य है कि वे मिल-जुलकर इसपर विमर्श करें और कोई ठोस आधार तय करें। भारत-सरकार एवं राष्ट्रभाषा-परिषद् को भी सचेतन रूप से इस पर ध्यान देना चाहिए, नहीं तो कहीं यह भाषा अपनी पहचान न खो दे। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा का कोई ऐसा कोश नहीं है जो भ्रामक नहीं है।

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखें और तर्क की कसौटी पर परखें कि कितनी हास्यास्पद बात है कि यदि एक शब्द जो स्त्रीलिंग है तो उसके तमाम पर्यायवाची शब्द भी स्त्रीलिंग ही होने चाहिए अथवा एक पुंल्लिग तो उसके सभी समानार्थी पुंल्लिग ही हों—

1. गोली लगते ही शेर की आत्मा निकल गई।
   गोली लगते ही शेर के प्राण निकल गए।

2. उसका शरीर बुखार से तप रहा था।
   उसकी देह काफी कमजोर हो गई।
   उसका तन सुन्दर है।
   उस मजदूर की काया बेकाम हो गई।

3. प्रदूषण के कारण उनकी आँख लाल हो गई।
धूल पड़ने के कारण उनके नेत्र लाल हो गए।

4. उसका पैर थर-थर कर रहा था।
उसके पाँव फट गए।
उसकी टाँग काँपने लगी।

5. कराटे-प्रशिक्षित लोगों के हाथ मजबूत होते हैं।
उसकी भुजा कमजोर पड़ गई।

इसी तरह एक और बात है, यदि हमारा कोई अंग (सम्पूर्ण रूप से) पुंल्लिंग या स्त्रीलिंग है तो फिर उसका अलग-अलग हिस्सा कैसे भिन्न लिंग का हो जाता है।

निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें—

हाथ			पैर		
हाथ	:	पुँल्लिग	पैर	:	पुँल्लिग
बाँह	:	स्त्रीलिंग	जाँघ	:	स्त्रीलिंग
उँगली	:	स्त्रीलिंग	घुटना	:	पुँल्लिग
कलाई	:	स्त्रीलिंग	तलवा	:	पुँल्लिग
अँगूठा	:	पुँल्लिग	एड़ी	:	स्त्रीलिंग

चेहरा—पुँल्लिग

बाल—यदि यह पुँल्लिग है तो फिर दाढ़ी, मूँछ, चेहरे पर स्थित आँख, नाक, भौंह, ठोड़ी आदि के बाल स्त्रीलिंग क्यों हैं?

दाढ़ी, मूँछ, जीभ–ये सभी स्त्रीलिंग और मुँह, कान, गाल, माथा, दाँत–ये सभी पुँल्लिग।

नोट : *पुँल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के नियमों और उदाहरणों की चर्चा शब्द-प्रकरण में 'स्त्री प्रत्यय' बताने के क्रम में हो चुकी है।*

वाक्य द्वारा लिंग-निर्णय :

वाक्य-द्वारा लिंग-निर्णय करने की मुख्य रूप से निम्नलिखित विधियाँ हैं :

1. संबंध विधि

इस विधि से लिंग-निर्णय करने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

(a) पुँल्लिग संज्ञाओं के लिए संबंध के चिह्न 'का-ना-रा' का प्रयोग करना चाहिए।

(b) उक्त संज्ञा को या तो वाक्य का उद्देश्य या कर्म या अन्य कारकों में प्रयोग करना चाहिए।

(c) संज्ञा का जिससे संबंध है उन दोनों को एक साथ रखना चाहिए।

नीचे लिखे उदाहरणों को देखें—

रूमाल *(उद्देश्य रूप में)*

यह मेरा रूमाल है। *('मेरा' से लिंग-स्पष्ट)*
उनका रूमाल सुन्दर है। *('उनका' से लिंग-स्पष्ट)*
अपना भी एक रूमाल है। *('अपना' से लिंग-स्पष्ट)*

पुस्तक

वह मेरी पुस्तक है। *('मेरी' से लिंग-स्पष्ट)*
उसकी पुस्तक यहाँ है। *('उसकी' से लिंग-स्पष्ट)*
वहाँ अपनी पुस्तक है। *('अपनी' से लिंग-स्पष्ट)*

कर्म एवं अन्य कारक रूपों में

1. वह मेरा रूमाल उपयोग में लाता है। *(कर्म रूप)*
2. वह मेरे रूमाल के लिए दौड़ पड़ा। *(सम्प्रदान रूप)*
3. मेरे रूमाल में गुलाब का फूल बना है। *(अधिकरण रूप)*
4. वह मेरे रूमाल से बल्ब खोलता है। *(करण रूप)*
5. मेरे रूमाल से सिक्का गायब हो गया। *(अपादान रूप)*

अब आप स्वयं पता करें पुस्तक का प्रयोग किस कारक में हुआ है—

1. मेरी पुस्तक जीने की कला सिखाती है।
2. उसने मेरी पुस्तक देखी है।
3. मेरी पुस्तक में क्या नहीं है।
4. आपकी पुस्तक पर पेपर किसने रख दिया है?
5. मेरी पुस्तक से ज्ञान लेकर देखो।
6. आप मेरी पुस्तक के लिए परेशान क्यों हैं?
7. मैं अपनी पुस्तक आपको नहीं दूँगा।

2. विशेषण-विधि

इस विधि से लिंग-स्पष्ट करने के लिए आप दी गई संज्ञा के लिए कोई सटीक आकारान्त (पुँल्लिग के लिए) या ईकारान्त (स्त्री० के लिए) विशेषण का चयन कर लीजिए, फिर संबंध विधि की तरह विभिन्न रूपों में उसका प्रयोग कर दीजिए।

आकारान्त विशेषण : अच्छा, बुरा, काला, गोरा, भूरा, लंबा, छोटा, ऊँचा, मोटा, पतला...

ईकारान्त विशेषण : अच्छी, बुरी, काली, गोरी, भूरी, लंबी, छोटी, ऊँची, मोटी, पतली...

नीचे लिखे उदाहरण देखें—

मोती : मोती चमकीला है। *('चमकीला' से लिंग स्पष्ट)*
दही : दही खट्टा नहीं है। *('खट्टा' से लिंग स्पष्ट)*
घी : घी महँगा है। *('महँगा' से लिंग स्पष्ट)*
पानी : पानी गंदा है। *('गंदा' से लिंग स्पष्ट)*
रूमाल : रूमाल चौड़ा है। *('चौड़ा' से लिंग स्पष्ट)*
पुस्तक : पुस्तक अच्छी है। *('अच्छी' से लिंग स्पष्ट)*
कलम : कलम नई है। *('नई' से लिंग स्पष्ट)*
ग्रंथ : ग्रंथ बड़ा है। *('बड़ा' से लिंग स्पष्ट)*
रात : रात डरावनी है। *('डरावनी' से लिंग स्पष्ट)*
दिन : दिन छोटा है। *('छोटा' से लिंग स्पष्ट)*
मौसम : मौसम सुहाना है। *('सुहाना' से लिंग स्पष्ट)*

3. क्रिया विधि

इस विधि से लिंग-निर्धारण के लिए भी आकारान्त व ईकारान्त क्रिया का प्रयोग होता है। विशेषण-विधि की तरह पुँल्लिग संज्ञा के लिए आकारान्त और स्त्रीलिंग संज्ञा के लिए ईकारान्त क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

निम्नलिखित वाक्यों को देखें—

गाय : गाय मीठा दूध देती है।
मोती : मोती चमकता है।

बचपन : उसका बचपन लौट आया है।
सड़क : यह सड़क लाहौर तक जाती है।
आदमी : आदमी आदमीयत भूल चुका है।
पेड़ : पेड़ ऑक्सीजन देता है।
चिड़िया : चिड़िया चहचहा रही है।
दीमक : दीमक लकड़ी को बर्बाद कर देती है।
खटमल : खटमल परजीवी होता है।

नोट : *उपर्युक्त वाक्यों में आपने देखा कि सभी संज्ञाओं का प्रयोग उद्देश्य (कर्त्ता) के रूप में हुआ है। ध्यान दें—क्रिया-विधि से लिंग-निर्णय करने पर वह संज्ञा शब्द (जिसका लिंग-स्पष्ट करना है) वाक्य में कर्त्ता का काम करता है।*

4. कर्त्ता में 'ने' चिह्न लगाकर

इस विधि से लिंग-निर्णय करने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

1. दिए गए शब्द को कर्म बनाएँ और कोई अन्य कर्त्ता चुन लें।
2. कर्त्ता में 'ने' चिह्न और 'कर्म' में शून्य चिह्न *(यानी कोई चिह्न नहीं)* लगाएँ।
3. क्रिया को भूतकाल में कर्म *(दिए गए शब्द)* के लिंग-वचन के अनुसार रखें।

ठीक इस तरह—

कर्त्ता (ने) + दिया गया शब्द (चिह्न रहित) + कर्मानुसार क्रिया

नीचे लिखे उदाहरणों को देखें—

घोड़ा : मैंने एक अरबी घोड़ा खरीदा।
घड़ी : चाचाजी ने मुझे एक घड़ी दी।
कुर्सी : आपने कुर्सी क्यों तोड़ी ?
साइकिल : मम्मी ने एक साइकिल दी।
गोली : तुमने ही गोली चलाई थी।
जूँ : बंदर ने जूँ निकाली।
कान : मैंने कान पकड़ा।
फसल : किसानों ने फसल काटी।
सूरज : मैंने उगता सूरज देखा।

ध्यातव्य बातें : *हमने केवल एकवचन संज्ञाओं का वाक्य-प्रयोग बताया है। बहुवचन के लिए उसी के अनुसार संबंध (के-ने-रे) विशेषण एवं क्रिया (एकारान्त-ईकारान्त) लगाने चाहिए।*

अभ्यास

A. निम्नलिखित संज्ञाओं को पुलिंग एवं स्त्रीलिंग में सजाएँ :

चिड़िया	गाय	मोर	बछड़ा	आदमी	चील	दीमक	खटिया	वर्षा
पानी	चीलर	खटमल	जूँ	नीम	औरत	पुरुष	महिला	किताब
ग्रंथ	समाचार	खबर	कसम	प्रतिज्ञा	सोच	पान	घी	जी
मोती	चीनी	जाति	चश्मा	नहर	झील	पहाड़	चोटी	बरतन
ध्यान	योगी	सपना	कैंची	नाली	गंगा	ब्रह्मपुत्र	खाड़ी	जनवरी
सौगात	संदेश	दिन	रात	नाक	कान	आँख	जी	जीभ
वायु	दाँत	गरमी	सर्दी	कफन	आकाश	दर्पण	चाँद	चाँदनी
छड़ी	साधु	विद्या	बचपन	मिठास	सफलता	पाठशाला	नौका	सूर्य
तारा	भवन	पंखा	दर्पण					

B. रिक्त स्थानों में क्रिया का सही रूप भरें :

1. आपको मम्मी बुला ………… है। *(रहा/रहे/रही)*
2. एक लड़का जोर-जोर से चीख ………… है। *(रहा/रहे/रही)*
3. आपका नौकर क्यों नहीं ………… ? *(आया/आयी)*
4. आपकी गाय मीठा दूध ………… है। *(देती/देता)*
5. एक भैंस खाई में गिर ………… है। *(गया/गई)*
6. मोर घटा देखकर नाचने ………… है। *(लगता/लगती)*
7. बाज पक्षियों पर हवा की तरह ………… है। *(टूटता/टूटती)*
8. नागिन अपने ही अंडों को खा ………… है। *(जाता/जाती)*
9. शेर जब ………… है तब जंगल के दरख्त तक काँप उठते हैं। *(दहाड़ता/दहाड़ती)*
10. यह बकरी किसने ………… है ? *(खरीदा/खरीदी)*
11. यह साँप मैंने ………… है। *(मारा/मारी)*
12. हाथी शाकाहारी ………… है। *(होता/होती)*
13. आपकी बेटी बहुत काम ………… है। *(करती/करता)*
14. प्रत्येक पति अपनी पत्नी से प्रेम नहीं ………… । *(करती/करता)*
15. ये लड़की क्या कह ………… है? *(रहा/रही)*

C. रिक्त स्थानों में उपयुक्त संज्ञा भरें :

1. ………… रँभा रही थी। *(गाय/भैंस/बकरी)*
2. ………… गाना गा रहा था। *(कोयल/लड़का/लड़की)*
3. ………… रोज बाँग देता है। *(मुर्गी/कबूतर/मुर्गा)*
4. वह ………… सठिया गया है। *(लड़का/बुड्ढा)*
5. ………… हमेशा ताजा मांस खाता है। *(शेरनी/शेर/कौआ)*
6. मेरे देखते-ही-देखते वह ………… छत से कूद गया। *(लड़का/लड़की)*
7. हर ………… यही चाहता है कि उसकी ………… वह करे जो वह चाहता है। *(पत्नी/बेटी/बेटा/पति)*
8. वहाँ प्रतिदिन एक ………… काटा जाता है। *(पेड़/बकरी)*
9. उसने दो में से एक ………… बेच दिया। *(गाय/बैल)*
10. ………… हर परिस्थिति का मुकाबला करता है। *(मर्द/औरत)*
11. हर ………… अपनी संतान से सम्मान चाहती है। *(पिता/माता)*
12. हर ………… प्यार का भूखा होता है। *(बेटा/बेटी)*
13. ………… दूध-दूध चिल्ला रहा था। *(बच्ची/बच्चा)*
14. ………… अपने जवान बेटे की मृत्यु के शोक में रो रही है। *(माता/बुढ़िया/विधवा)*
15. वह ………… बहुत गाली-गलौज करता है। *(बुढ़िया/बुड्ढा)*
16. ………… होते ही तारे छिटकने लगे। *(सुबह/शाम)*
17. ………… के कारण ही स्वाइन फ्लू फैला। *(मुर्गा/सूअर)*
18. ………… एक प्रसिद्ध पॉप सिंगर थे। *(रफी/ जैक्सन)*
19. ………… कहते हैं, ''बड़ा नाम करेगा।'' *(दादा/पापा)*
20. ………… होने पर मेढ़क टरटराते हैं। *(जाड़ा/वर्षा)*

D. रिक्त स्थानों में सर्वनाम का सही रूप भरें :

1. ………… गाय कल से बीमार है। *(मेरा/मेरी)*
2. ………… पत्नी अभी तक बाजार से नहीं लौटी। *(उसका/उसकी)*
3. आजकल ………… भाई क्या कर रहा है ? *(तुम्हारा/तुम्हारी)*
4. ………… भाषा कठिन नहीं होनी चाहिए। *(हमारा/हमारी)*
5. ………… देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। *(हमारी/हमारा)*

6. ………… बकरी ………… सब्जी खा गई है। *(तुम्हारा/तुम्हारी/मेरा/मेरी)*
7. ………… नौकर ………… खेत चरा है। *(आपका/आपकी/मेरा/मेरी)*
8. ………… माँ का ………… पत्नी ने अभी-अभी देखा है। *(आपके/आपकी/मेरे/मेरी)*
9. ………… पढ़ाई लंदन में हुई। *(इनका/इनकी)*
10. वह ………… अच्छा खाना बनाती है। *(रसोइया/दाई)*
11. यह लड़की कल तक ………… फर्म में काम करती थी, लेकिन आज ………… भाई उसे लेने आ गया है। *(मेरा/मेरी/उसका/उसकी)*
12. ………… माँ बहुत दुखी हैं; क्योंकि ………… पत्नी उसे ठीक से भोजन तक नहीं देती। *(उसका/उसके/उसकी)*
13. मैंने ………… माँ की बात मान ली; लेकिन उसने ………… भाभी का कहना नहीं माना। *(उसका/उसकी/मेरा/मेरी)*
14. आप ………… कुत्ते को बाँधकर क्यों नहीं रखते ? *(अपना/अपने/अपनी)*
15. ………… माँ ने दूध पिलाया, जो ………… मुकाबला करे? *(किसका/किसकी/उसका/उसकी)*
16. सच ही कहा गया है, ………… लाठी ………… भैंस। *(जिसका/जिसकी/उसका/उसकी)*
17. यह वही औरत है, ………… बच्चा कल खो गई थी। *(जिसका/जिसकी)*
18. ………… गायों ने मेरे खेत उजाड़ दिये। *(उसका/उसकी/उसके)*
19. कल तक जो ………… भाई था, आज वही शत्रु बन बैठा। *(उसका/उसकी)*
20. ………… आकाओं को भी बुला लेना, वे भी ………… अरमान पूरे कर लें। *(अपना/अपने)*

E. निम्नलिखित वाक्यों में लिंग-संबंधी अशुद्धियाँ हैं। इन्हें दूर कर वाक्यों को फिर से उतारें :

1. यह लड़की अच्छी है, मगर इसका भाई अच्छी नहीं है।
2. मर्द गर्वीली और औरत शर्मीली — वह जमाना बीत गई।
3. जिस दिन मेरा छोटा भाई मुम्बई गया, उसी दिन मेरा छोटा बहन आया।
4. चिकना-चुपड़ा बात करनेवाला ठग भी हो सकता है।
5. इन दिनों सभी वस्तुएँ महँगा है।
6. फिर बढ़ गई पेट्रोल की दाम।
7. कुछ वर्षों से गेहूँ महँगी हो गई है।
8. बंगाली बुद्धिमान होती है और केरलाइट बुद्धिमान तथा मेहनती दोनों।
9. गुजराती धोती पहनती है और मद्रासी लुंगी।
10. ईसाई शव दफनाती है और हिन्दू जलाती।
11. अमरीकी तथा चीनी एक दूसरे से आगे निकलना चाहती है।
12. हर दुकानदार चार पैसे कमाने के लिए ही बैठी है।
13. नर्स समाज का बड़ा उपकार करता है।
14. पृथ्वी प्राणियों को जीवन देता है।
15. पूरा रात पानी बरसती रही; परन्तु बिजली एकबार भी न ही चमका।
16. राष्ट्र की निर्माण एक दिन में नहीं होती .
17. कहते हैं, हर व्यक्ति मृत्यु के समय अपनी जीवन में की गई कामों का पन्ना उलटता है।
18. ज्ञान और धन लगातार अर्जित करने से आती है।
19. आखिर तेरा बौखलाहट पकड़ा ही गया।
20. मकान का बनावट अच्छा था।

F. निम्नलिखित वाक्यों मे निर्दिष्ट क्रियाओं को संज्ञाओं में परिवर्तित कर उनके अनुरूप वाक्यों का रूपान्तरण करें। *(कोष्ठकों में निर्मित होनेवाले संभावित संज्ञा के रूप दिए गए हैं)*

1. वह चाहता तो काम उलझता नहीं। *(में कोई/किसी, उलझन, पड़ता/पड़ती)*
2. वह हर काम में गड़बड़ाता है। *(गड़बड़, करता/करती)*

3. वह बात को (उसे बात की) पकड़ता तो खूब है, मगर वह उसे देर तक दिमाग में नहीं रखता। (पकड़)
4. वह इनसान को (उसे इनसान की) पहचानता न हो, ऐसी बात तो नहीं, मगर धोखा खा जाता है। (पहचान)
5. वह (उसे) अपने विषय को अच्छी तरह समझता है। (की अच्छी समझ)
6. अगर पठान घायल नहीं होता तो ये टीम (इस टीम की) हारती नहीं। (हार नहीं होता/होती)
7. उसका (उसकी) मुस्कराना बड़ा/बड़ी आकर्षक है। (मुसकान)
8. (तुम्हारा/तुम्हारी) यह भटकना अच्छी बात नहीं है। (भटकना)
9. वह वृक्षों का उपयोग समझता है। (उसे, के/की, उपयोगिता समझ)
10. वह बात को (उसे) पकड़ता खूब है। (की पकड़)

G. दिए गए विकल्पों में से आवश्यकतानुसार पदों का चयन करें :

1. कहते हैं जन्म और मृत्यु का/की पीड़ा असहनीय होता/होती है।
2. मेरा/मेरी कामना तो यही है कि सभी सुखी रहें।
3. सुन्दरता आँखों को और निष्ठा मनुष्य के मन को मोह लेता/लेती है।
4. मानव की/का इच्छा बलवान होता/होती है, वह जो चाहे करा सकता/सकती है।
5. जब वासना जीवन का केन्द्र बन जाता/जाती है, तब खुशियाँ मानव के साथ छोड़ देता/देती हैं।
6. मैं इस विषय पर आप का/की प्रतिक्रिया जानना चाहता हूँ।
7. मैंने प्रतिज्ञा कर ली/लिया है कि अबसे गलत आचरण नहीं करूँगा।
8. वह मानो कि तुम्हारा/तुम्हारी परीक्षा हो रहा/रही है।
9. जब आपको वास्तविकता का पता चलेगा/चलेगी तब आप भौंचक्के रह जाएँगे/जाएगा/जाओगी।
10. वह मेरा/मेरे/मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है।
11. अपमान का/की वेदना असह्य होता/होती है।
12. मृत्यु तो एक बार आता/आती है; किन्तु चिन्ता तो बार-बार होता/होती है।
13. हर व्यक्ति का/की अपना/अपनी सीमा होता/होती है।
14. इस संस्था का/की मान्यता समाप्त हो गया/गयी है।
15. उसका/उसकी विनम्रता मन को मोह लेता/लेती है।
16. बुढ़ापा किसी का मित्र नहीं होता/होती।
17. हर समय बचपना नहीं दिखाना/दिखानी चाहिए।
18. बहुत अपनापन दिखाया/दिखायी अब और नहीं।
19. आपका/आपकी बढ़ावा पाकर ही वह इतना कुछ कर सका।
20. कहो तो एकबार तुम्हारा/तुम्हारी भी इम्तिहान ले ही लूँ।

H. कोष्ठक में दी गई क्रियाओं से संज्ञा बनाकर रिक्त स्थानों को भरें :

1. उसे हर समय चोरी का .... लगा रहता है। (खटकना)
2. बिजली का ऐसा .... लगा कि अवधेश चार चिताने चित हो गया। (झटकना)
3. उनका आपस में .... हो गया है। (झगड़ना)
4. अपने बड़े भैया की .... मन से निकाल दो। (कहना-सुनना)
5. कल टहलते समय पत्थर से ऐसा .... लगा कि वह मुँह के बल गिर पड़ा। (झटकना)
6. नर्तकी ने पहला ही .... लगाया कि लोग पागलों की तरह शोर करने लगे। (ठुमकना)
7. बाढ़ का ऐसा .... आया कि गाँव-का-गाँव बह गया। (रेलना)

8. उनकी गाय को कल से ही .... हो गया है। *(अफरना)*
9. हवा का इतना जबर्दस्त .... आया कि सारी खिड़कियाँ खुल गईं। *(झोंकना)*
10. जाकिर हुसैन ने पहला ही .... लगाया कि लोग झूमने लगे। *(ठेकना)*

I. निम्नलिखित वाक्यों में से त्रुटिवाले भाग पर ✓ लगाएँ। यदि कोई त्रुटि नहीं हो तो 'कोई त्रुटि नहीं पर ✓ लगाएँ :

1. (a) मुख्य अतिथि आए / (b) और एक फूलों की माला पहनाकर / (c) उनका स्वागत किया गया / (d) कोई त्रुटि नहीं। *(स्टेनोग्राफर परीक्षा)*
2. (a) मौसम सुहावना है / (b) परन्तु कार खराब हो जाने से / (c) हम कोलकाता नहीं जा सकेंगे / (d) कोई त्रुटि नहीं। *(असिस्टेंट ग्रेड परीक्षा)*
3. (a) अचानक उनका यह / (b) अनावश्यक प्रश्न सुनकर / (c) मेरा पारा एकदम / (d) चढ़ चुका था / (e) कोई त्रुटि नहीं *(बी.एस.आर.बी.परीक्षा)*
4. (a) यथार्थ मनुष्य वही है / (b) जो मानवता का आदर करना जानता है / (c) और कर सकता है / (d) कोई त्रुटि नहीं। *(सब इंस्पेक्टर्स परीक्षा)*
5. (a) मनुष्य को कभी अपने धन-जन पर / (b) गौरव नहीं करना चाहिए / (c) क्योंकि ये अचिर-स्थायी हैं / (d) कोई त्रुटि नहीं। *(असिस्टेंट ग्रेड परीक्षा)*
6. (a) मैं नीतीश और चन्द्रा / (b) के साथ पार्क को / (c) सैर के लिए / (d) गया था। कोई त्रुटि नहीं। *(एल.आई.सी. परीक्षा)*
7. (a) काम काज के समय / (b) प्रायः ऐसा हो जाता है / (c) कि खाने-पीने की / (d) सुधबुध चली जाती है / (e) कोई त्रुटि नहीं *(बी.एस.आर.बी. परीक्षा)*
8. (a) डॉक्टर के कहने पर / (b) मैंने शाम-सुबह लम्बी / (c) सैर पर जाना / (d) शुरू कर दिया / (e) कोई त्रुटि नहीं *(बी.एड.परीक्षा)*
9. (a) मैं पटना गया / (b) तो उस समय / (c) मेरे पास / (d) केवल बीस रुपये मात्र थे / (e) कोई त्रुटि नहीं *(लोअर सबार्डिनेट)*
10. (a) मैंने / (b) मेरी किताब / (c) पढ़ ली / (d) है / (e) कोई त्रुटि नहीं *(बी. एड. परीक्षा)*
11. (a) हमारे शहर के / (b) नया इलाके में / (c) वाहन काफी तेजी से / (d) चलाया जा सकता है / (e) कोई त्रुटि नहीं *(एल.आई.सी.परीक्षा)*
12. (a) गर्मी की उस दोपहरी में / (b) भीषण अग्निकांड को देखकर / (c) मेरा तो प्राण ही निकल गया / (d) कोई त्रुटि नहीं। *(ट्रांसलेटर परीक्षा)*
13. (a) आधुनिक परिवार में / (b) मानसिक तनाव जिन्दगी का / (c) एक हिस्सा बनकर / (d) रह गई है / (e) कोई त्रुटि नहीं। *(बी.एस.आर.बी. परीक्षा)*

उत्तर

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (a) 5. (b) 6. (b) 7. (d)
8. (b) 9. (d) 10. (b) 11. (b) 12. (c) 13. (d)

★★★